ओ३म्

'ईश्वर सर्वव्यापक होने से सदा अवतरित है, उसे अवतार की न आवश्यकता है और न वह अवतार ले सकता है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर का अवतार होता है या नहीं? विचारणीय प्रश्न है। हमारे पौराणिक बन्धु जो स्वयं को सनातन धर्मी कहते हैं, ईश्वर का अवतार होना मानते हैं और राम, कृष्ण आदि अनेक महापुरूषों को ईश्वर का अवतार ही नहीं मानते अपितु उनकी मूर्तियां बनाकर उन्हें पौराणिक विधि व रीति से पूजते भी हैं। पहली बात तो यह कि ईश्वर का अवतार ही विवादास्पद है, फिर बिना किसी प्रमाण व प्रबल तर्क व युक्ति के उन ऐतिहासिक महापुरूषों की मूर्ति बना कर पूजा करना आज के वैज्ञानिक युग में उचित नहीं ठहरता क्योंकि मूर्ति के गुण उस सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान के गुणों के सर्वथा विपरीत हैं। **आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित ऐसा संगठन है जो वेदों को तर्क व ज्ञान, बुद्धि व युक्ति की कसौटी पर खरा उतरने के कारण ईश्वर से प्राप्त सत्य ज्ञान की पुस्तकें मानता है।** वैदिक ज्ञान एवं युक्ति व प्रमाणों से आर्य समाज ईश्वर के अवतार की मान्यता को कपोल कल्पित, अज्ञानता व पाखण्ड तथा अन्धविश्वास मानता है तथा अपनी मान्यताओं व कथ्यों को वेदों से सिद्ध भी करता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल 1825–1883 में पौराणिक मतावलम्बियों से मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किये परन्तु हमारे पौराणिक भाई अपनी मूर्तिपूजा व अवतारवाद आदि अवैदिक मान्यताओं को वेद विहित या युक्ति आदि प्रमाणों से सत्य सिद्ध नहीं कर सके। जब विगत 145 वर्षों में सिद्ध नहीं कर सके तो भविष्य में भी सिद्ध नहीं कर सकते जिसका कारण झूठ के पैर न होना है। झूठ को विद्वानों से स्वीकार नहीं कराया जा सकता। इसे तो अन्धी श्रद्धा से पूर्ण तथा ज्ञान के नेत्रों से हीन व्यक्तियों द्वारा ही स्वीकार कराया जा सकता है।

विचार करने पर सनातन मत कहलाने वाले बन्धु व सनातन वैदिक धर्मी आर्य समाजी भी ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी स्वरूप वाला होना स्वीकार करते हैं। इसका अर्थ हुआ कि वह इस ब्रह्माण्ड में सब जगहों व स्थानों पर, यहां तक की हमारी जीवात्मा के भीतर भी सृष्टिकर्त्ता ईश्वर व्यापक है। जब वह आकाश, पाताल, धरती व आकाश व संसार के कण–कण में सब जगह सब समय में पहले से ही मौजूद व उपस्थित है तो फिर वह मनुष्य रूप धारण करता है, यह मानना अज्ञानता पूर्ण ही कहा जा सकता है। जब वह ईश्वर इस ब्रह्माण्ड का निर्माण, इसका संचालन व प्राणि जगत का सृजन व उत्पत्ति तथा वेदों व भाषा का ज्ञान आदि देने के साथ वर्तमान में भी सभी प्राणियों के भीतर निरन्तर शुभ प्रेरणायें दे रहा है तो फिर उसे अवतार लेने की आवश्यकता को मानना अपनी अज्ञानता को सिद्ध करने के साथ ईश्वर के स्वरूप को भली प्रकार से न समझना ही कहा जा सकता है।

कहा जाता है कि दुष्टों के दमन के लिए ईश्वर अवतार लेता है। उदाहरण के रूप में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को लिया जाता और कहा जाता है कि रावण के वध के लिए ईश्वर को अर्थात् राम को अवतार लेना पड़ा। अब यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या ईश्वर बिना अवतार लिए रावण को मार सकता था या नहीं? यदि नहीं मार सकता था तो यह तर्क स्वीकार किया जा सकता है। आईये, इस तर्क की पड़ताल करते हैं। इस ब्रह्माण्ड को बने हुए 1.96 अरब वर्ष हो चुके हैं। इस अवधि में गणनातीत या असंख्य मनुष्य आदि उत्पन्न हुए व मरे भी। क्या वह बिना ईश्वर के अप्रत्यक्ष व परोक्ष प्रेरणा व मर्जी से मर गये या वह सब ईश्वर की प्रेरणा व मर्जी व उसके प्रताप व प्रयत्नों से ही मरे हैं, इसका उत्तर यह है कि सबकी मृत्यु का कारण ईश्वर ही है जिस प्रकार से कि जन्म का कारण ईश्वर है। जब सब प्राणियों के जन्म का कारण ईश्वर का निराकार व अजन्मा व अनावतार स्वरूप है तो रावण हो या राम, कृष्ण जी हों या अर्जुन, युधिष्ठिर, कंस या दुर्योधन आदि, सबकी मृत्यु का कारण निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी ईश्वर ही सिद्ध होता है। रावण जैसे या रावण से भी बलवान, दुष्ट और अन्यायकारी मनुष्य व राक्षस के लिए ईश्वर के लिए अवतार की कोई आवश्यकता नहीं है। आजकल रोज बड़े–बड़े आतंकवादी और धर्मात्मा भी मर रहे हैं, उन्हें किसी अवतार द्वारा नहीं अपितु निराकार ईश्वर द्वारा ही अनवतार स्वरूप से धराशायी किया जा रहा है। **वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह केवल संकल्प से ही इस सारे संसार को बनाता व चलाता है तो इस महद कार्य की तुलना में रावण आदि अन्यायकारियों को मारना तो अति तुच्छ कार्य है, अतः अवतार वाद की कल्पना व मान्यता तर्क, युक्ति व शास्त्रीय प्रमाणों से हीन होने के कारण असिद्ध, पाखण्ड एवं अन्ध विश्वास ही है।**

ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी तथा सर्वशक्तिमान है, अतः उसे किसी भी छोटे या बड़े से बड़े प्राणी को मारने के लिए अवतार लेने के लिए अवतार की कदापि आवश्यकता नहीं है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि रावण, कंस व दुर्योधन ने जो बुरे कार्य किए, वह अपनी जवानी या बाद के वर्षों में किये थे जबकि मर्यादा पुरूषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण जी का जन्म अन्यायकारियों व दुष्टों का वध वा हत्या करने से लगभग 25 से 80 वर्ष पूर्व हो चुका था। इस प्रसंग में श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण ले सकते हैं जिन्होंने रावण का संहार किया। रामायण का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि रावण की आयु राम से अधिक थी। इसका कारण राम व रावण का जब युद्ध हुआ, उस समय राम निःसन्तान थे और रावण का पुत्र इन्द्रजीत या मेघनाथ प्रसिद्ध है। अतः राम व रावण की आयु में लगभग 25 से 40 वर्ष तक का अन्तर तो रहा ही है। राम ने रावण से युद्ध को टालने के लिए सभी सम्भव प्रयास किये। पहले हनुमान जी लंका गये और उसके बाद बाली के पुत्र अंगद को रावण को समझाने व सीता जी को लौटाने के लिए प्रयास करने के लिए भेजा गया जिससे कि अनावश्यक युद्ध को टाला जा सके। जब यह सम्भव न हुआ तो युद्ध हुआ जिसका परिणाम रावण का वध व जीवानान्त हुआ। इस घटना से पता चलता है कि यह घटना राम के जन्म व अवतार लेने के 25 से 40 वर्ष बाद घटी थी। **इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि रावण के बुरे कर्मों से लगभग 25 से 40 वर्ष पूर्व ही ईश्वर अर्थात् श्री राम ने रावण को मारने के लिए अवतार ले लिया था जबकि उसकी कोई आवश्यकता थी ही नहीं। ऐसा मानना बुद्धसंगत नहीं है और इससे यह सिद्ध होता है कि राम ईश्वर के अवतार नहीं थे।** ईश्वर का रामचन्द्र जी के रूप अवतार लेना तब उचित होता जब यह निश्चित होता कि इस दुष्ट रावण का वध करना आवश्यक व अपरिहार्य है और वह बिना अवतार के नहीं हो सकता था। यह स्थिति तो सीता हरण के बाद अंगद के प्रस्ताव को ठुकरा देने पर उत्पन्न हुई थी। इससे 25–40 पूर्व ही श्री राम चन्द्र जी का जन्म हो चुका था जिसे अवतार कदापित नहीं कहा जा सकता। **अब यदि राम अवतार थे और उन्होंने अपने अवतार लेने के उद्देश्य को रावण को मार कर पूरा कर लिया था तो फिर वह अनेक वर्षों तक जीवित क्यों रहे? उद्देश्य व काम पूरा कर लेने के बाद वर्षों तक वही जमें रहना औचीत्य पूर्ण नहीं माना जा सकता।** क्यों नहीं उन्होंने सीता जी सहित कौशल्या आदि माताओं व लक्ष्मण सहित अपने सभी भाईयों को अपने ईश्वर का अवतार होने की बात कह कर अपने मूल निराकार व सर्वव्यापक स्वरूप को धारण कर लिया? उसके बाद वह अनेक वर्षों तक जीवित रहे और वैदिक व्यवस्था के अनुसार राज्य किया। इन सबको जानने व समझने पर सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर का श्री रामचन्द्र जी के रूप में अवतार लेना असत्य सिद्ध होता है। यही स्थिति योगेश्वर श्री कृष्ण जी व अन्य अवतारों के जीवन व कार्यों पर विचार करने पर भी सामने आती है। **अतः ईश्वर का अवतार नहीं होता और न ही हमारे आदर्श व आदरास्पद श्री राम व श्री कृष्ण ईश्वर के अवतार थे।** हां यह अपने समय के महापुरूष थे जैसे कि 19वी शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती हो गये हैं जिन्होंने वेदों व श्री राम व श्री कृष्ण की संस्कृति व विरासत का पोषण किया, उसे पुनर्जीवित, पल्लिवित व पोषित किया।

वेदादि शास्त्रों में ईश्वर को अजन्मा व अमर कहा है। अजन्मा व्यक्ति जन्म नहीं लेता और लेगा तो यह उसके स्वाभाविक गुण के विपरीत होगा जिससे उसकी सत्ता पर ही प्रश्न चिन्ह लग जायेगा? सर्वशक्तिमान सत्ता का धनी ईश्वर अपने संकल्प मात्र से जो करना होता है, करता है। बड़े से बडा आततायी, दुष्ट, अन्यायी का अन्त करना बिना अवतार के ही उसके लिए अति सरल व सम्भव है। उसने अपने बारे में मनुष्यों को जानने योग्य पूर्ण ज्ञान वेदों में दे दिया है। ज्ञानी लोग वेद से और अल्प ज्ञानी लोग वेदों के अनुकूल व अनुरूप वैदिक साहित्य से ईश्वर के बारे में आवश्यकतानुसार जान कर अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं। हमें लगता है कि यह कहना कि ईश्वर अवतार लेता है या ईश्वर ने कभी अवतार लिया था, उसको एक प्रकार से अपमानित करना है। इसलिए कि वह वो कार्य जो अवतार ले कर करता है अन्यथा नहीं कर सकता, इससे उसकी सर्वशक्तिमत्ता का गुण लांछित होता है। हम आशा करते हैं कि प्रबुद्ध पाठक हमारे विचारों से पूर्ण रूप से सहमत होंगे। इस लेख से यह ज्ञात होता है कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम व योगेश्वर श्री कृष्ण अपने समय के महान पुरूष थे। इन्हें गुणों की खान, ऐश्वर्यशाली व महिमावान होने के कारण भगवान तो कहा जा सकता है परन्तु वह सर्वव्यापक ईश्वर से भिन्न एक सत्ता, **''जीवात्मा''** ही थे। यह बात वेदादि सदग्रन्थों के स्वाध्याय, विज्ञान, तर्क बुद्धि, विवेक व स्वार्थहीन होकर ही जानी जा सकती है।

–मन मोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001 / फोनः 09412985121
इमेलः manmohanarya@gmail.com